क्या श्रीकृष्ण ने अर्जुन को लड़ाई के मैदान में गीता– ज्ञान दिया था?

–महाभारत पर एक नज़र–

आज प्राय: सभी लोगों का यह दृढ़ विश्वास है कि गीता ज्ञान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को लड़ाई के मैदान में दिया था। लोगों की इस मान्यता का मुख्य आधार महाभारत ही है, क्योंकि महाभारत में ही कौरवों और पाण्डवों के युद्ध का वर्णन है और वर्तमान समय में जो गीता मिलती है, उसे भी महाभारत ग्रंथ ही का एक छोटा– सा भाग माना जाता है। महाभारत के अतिरिक्त, श्रीमद्भागवत् के आधार पर भी लोग अपने इस मत की पुष्टि करते हो कि गीता ज्ञान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को दिया था। इस बात को लोग सैकड़ों वर्षों से यों ही मानते चले आये हो और किसी ने भी इसमें सन्देह की गुंजाइश ही नह° समझी कि श्रीकृष्ण से भिन्न दूसरे किसी ने ज्ञान दिया होगा। किसी भी व्यक्ति के मन में स्पष्ट रूप से यह बात नह° आई कि यह ज्ञान युद्ध के मैदान में नह° दिया गया, बल्कि अन्य अमुक परिस्थिति में तथा अमुक स्थान पर दिया गया। परन्तु हम इस लेख में निष्पक्ष भाव से कुछ स्पष्ट करेंगे कि इस प्रचलित मान्यता में सन्देह की गुंजाइश ही नह°, बल्कि सन्देह के ज़ोरदार कारण हो और कि यदि सत्यता की दृष्टि से देखा जाए, तो वास्तव में गीता– ज्ञान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को नह° दिया था, बल्कि परमपिता परमात्मा ने यह ज्ञान प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा अनेकानेक नर– नारियों को दिया था और वह अब भी दे रहे हो। सबसे पहले तो हम इस बात को थोड़ा व्यक्त करेंगे कि महाभारत आदि में अथवा युद्ध के इस वृत्तान्त में सन्देह की गुंजाइश कहाँ तक है।

क्या महाभारत में वख्रणत पाण्डवों की जन्म कहानियाँ सत्य हो?

आज महाभारत जिस रूप में मिलता है, उसको पढ़ने वाले सभी जानते हो कि उसका आधार ही युधिष्ठिर, अर्जुन आदि– आदि पाण्डवों तथा दुर्योधन, कर्ण आदि कौरव पक्ष पर है। यदि पाण्डवों और कौरवों को महाभारत से निकाल दें, तो महाभारत का कुछ भी शेष नह° रहता। परन्तु आप देखेंगे कि महाभारत में पाण्डवों तथा कर्ण आदि की जो जन्म– कहानी दी है, वह अविश्वसनीय है। हम उस ओर आपका ध्यान आकख्षत करने के लिए, उनकी जन्म कहानी को संक्षेप में यहाँ दुहराते हो।

महाभारत में लिखा है कि जब कुन्ती अभी छोटी थी, तो दुर्वासा ऋषि उसके पिता के पास अतिथि होकर ठहरे थे। कुन्ती ने बहुत समय तब दुर्वासा ऋषि की सेवा की। दुर्वासा कुन्ती पर बहुत प्रसन्न

हुए और उन्होंने उसको एक दिव्य मंत्र सिखाया। दुर्वासा ने कुन्ती को कहा— ''जब कभी तुम यह मंत्र पढ़कर किसी भी देवता का आह्वान करोगी, तो वह आकर तुम्हारे सामने प्रकट होगा और तुम्हें अपने— समान शोभनीक पुत्र प्रदान करेगा।'' कौतूहल वश अभी कन्या अवस्था में ही दुर्वासा मुनि के पढ़ाये हुए मंत्र को पढ़ बैठने पर और सूर्य का आह्वान करने पर, सूर्य एक सुन्दर युवक के रूप में कुन्ती के आगे आ खड़ा हुआ और उसने कुन्ती को कहा कि मो तुम्हें एक पुत्र दूँगा। कुन्ती ने कहा कि मो तो अभी एक छोटी कन्या हूँ, मुझे पुत्र की इच्छा नह° है, मोने तो कौतूहल— वश मंत्र का प्रयोग किया था, अतः आप क्षमा करके चले जाइये। परन्तु सूर्य ने कुन्ती को पुत्र दिया, तो भी कुन्ती कुंवारी ही रही। उस पुत्र का नाम हुआ 'कर्ण'। कर्ण कवच और स्वख्रगक कुण्डलों सहित पैदा हुआ। कई लोग कहते हो कि कर्ण कुन्ती के कान से पैदा हुआ और कुन्ती कुँवारी भी रही। देखिये यह सारी बात कितनी अजीब और अविश्वसनीय है? यदि कर्ण गर्भ से पैदा हुआ तो कुन्ती के कुमारी रहने की बात कैसे ठीक हो सकती है? यदि कहा जाये कि कर्ण कान से पैदा हुआ तो यह बात कैसे मानी जा सकती है?

इसी प्रकार आगे वर्णन आता है कि एक बार पाण्डु वन में शिकार करने गया। वहाँ एक ऋषि और उसकी Öी **किरन और किरनी** का रूप धारण करके भोग कर रहे थे। पाण्डु ने तीर चलाया। तीर लगने से किरन रूपधारी ऋषि की मृत्यु हो गई। मरते समय उसने शाप दिया कि जैसे तुमने मुझे Öी— भोग के समय मारा है, वैसे ही तुम भी जब Öी— भोग करने लगोगे तब मरोगे। इस शाप के बाद पाण्डु अपनी Öी कुन्ती और माद्री के साथ वन में रहने लगा। वहाँ उसने कुन्ती से एक दिन अनुरोध किया कि दुर्वासा ऋषि ने उसे जो मंत्र सिखाया था, उसे वह माद्री को भी सिखये और दोनों मंत्र— पाठ करके देवताओं का आह्वान करें तथा पुत्र पैदा करें। लिखा है कि कुन्ती ने मंत्र का पाठ करके धर्मराज का आह्वान किया, तो उससे युधिष्ठिर पैदा हुआ, इन्द्र का आह्वान किया तो अर्जुन पैदा हुआ, वायु का आह्वान किया तो भीम पैदा हुआ और माद्री ने इसी रीति से अश्विनी कुमारों से नकुल और सहदेव पैदा किए और यह पाँच 'पाण्डव' कहलाये। उपर्युक्त दोनों कहनियों पर आप किन्चित विचार कीजिये। क्या कुण्डलों और कवच सहित भी कभी कोई शिशु पैदा हो सकता है? क्या मंत्र के उच्चारण मात्र से ही पुत्र पैदा हो सकता है? क्या सूर्य या वायु आदि भी कोई जीव हो कि जिनका आह्वान करने से वह पुरुष— रूप में सामने आये और पुत्र का वरदान दे गये? वह ऋषि और उसकी पत्नी हिरन— हिरनी का रूप क्यों धारण किए हुए थे? पुनश्च, जबकि पाण्डु ने उन पुत्रों को जन्म ही नह° दिया था, तो युधिष्ठिर, भीम

आदि 'पाण्डव' (पाण्डु—पुत्र) क्यों कहलाये? इस प्रकार अन्यान्य पहलुओं पर विचार करने से आप मानेंगे कि जिन पाण्डुओं के आधार पर सारे महाभारत युद्ध की चर्चा है, स्वयं उनके जन्म की कहानी जिस प्रकार महाभारत में बताई जाती है, उस प्रकार तो वह बिल्कुल ही अविश्वसनीय है।

पाण्डवों की जन्म—कहानी के अतिरिक्त ऊपर हमने कर्ण के जन्म की कहानी भी बताई है। कर्ण ने कौरवों का पक्ष लिया था और वह उसका सेनापति भी बना था— ऐसा महाभारत में लिखा है। अब कौरव पक्ष के एक अन्य महारथी 'भीष्म' जी के जन्म के भी संक्षिप्त वर्णन पर थोड़ा ध्यान दीजिए। महाभारत में लिखा है कि आठों वसु (मालूम रहे कि 'वसु' एक प्रकार के देवताओं को कहा जाता है) एक बार ऋषि वशिष्ठ की कामधेनु, जो कि लकड़ी, दूध, हवन— सामग्री इत्यादि देती थी, भगाकर अमरलोक को ले गये। भगाने के इस कार्य में मुख्य पार्ट 'प्रभास' नाम वाले एक वसु (देवता) का था। वशिष्ठ ने शाप दिया कि आठों वसुओं का जन्म मृत्युलोक में हो। अब उनके जन्म के लिए अनुकूल माता भी चाहिए थी। लिखा है कि गंगा ने एक नारी का रूप धारण किया, फिर उसका विवाह राजा शान्तनु से हुआ और उस गंगा के गर्भ से एक वसु का जन्म हुआ। उसका नाम बाद में 'भीष्म' हुआ क्योंकि वह बड़ा साहसी और दृढ़ प्रतिज्ञा वाला था। भीष्म गंगा— पुत्र था। इसी प्रकार, शिखण्डी के बारे में लिखा है कि वह कभी ÓीÓ और कभी पुरुष बन जाता था। अब आप कुछ गम्भीरतापूर्वक सोचिये कि क्या कोई गाय लकड़ी, हवन— सामग्री आदि देने वाली हो सकती है, और क्या किसी गाय को अमरलोक भगाकर ले जाया जा सकता है? पुनश्च क्या गंगा नदी का ÓीÓ रूप धारण करना, वसु का शापित होकर गंगा के गर्भ में जन्म लेना आदि— आदि बातें सत्य हो सकती हो? क्या यह लेखक की इस वृत्ति का परिणाम नह° है कि वह जिन— जिन को देवता, वसु या देवी आदि मानता है उन सभी को उसने कोई न कोई मानवी रूप देकर महाभारत का पात्र बना दिया है और इस प्रकार अपने कथानक को धाख्रमक तथा रोचक बना दी है? स्पष्ट है कि जिन पाण्डवों, कौरवों, कर्ण, भीष्म, शिखण्डी आदि— आदि पर महाभारत ग्रन्थ रुपी इमारत खड़ी है जबकि उनकी जीवन— कहानी भी उस रूप में विश्वास योग्य नह° है, जिस रूप में कि सूत मुनि ने वर्णन की है तो कवियों द्वारा महाभारत युद्ध का जैसा मन— गढ़न्त और श्रीकृष्ण द्वारा युद्ध के प्रारम्भ से पहले गीता— ज्ञान दिये जाने का प्रसंग भी तो संदिग्ध अथवा निर्मूल हो सकता है।

महाभारत को पढ़ने पर आप देखेंगे कि उसमें शायद ही कोई ऐसा मुख्य व्यक्ति होगा जिसका जन्म किसी विश्वसनीय रीति से अथवा लोक— मर्यादा के अनुकूल हुआ हो। स्वयं व्यास, जिसे महाभारत की कथा का रचयिता माना जाता है और शुकदेव, जिसके बारे में प्रसिद्ध है कि उसने राजा परीक्षित को महाभारत की कथा सुनाई, उसके जन्म की कहानी भी बड़ी अजीब है। सभी की जन्म कहानी को हम इस लेख में कहाँ तक वर्णन करें? इन्हें पाठक स्वयं महाभारत ही से पढ़कर विचार कर लें कि एक— एक व्यक्ति की जन्म कहानी कैसी रोचक है और गढ़ी गई है। ऊपर, पाण्डवों के जन्म की जो कहनियाँ बताई गई है उनसे वह (शुकदेव आदि की जन्म कथा) किसी तरह भी कम नह° है। अत: जबकि सभी की जन्म— कहानी ही संदिग्ध है तब उनके आगे के वृत्तान्तों का क्या आधार माना जाये?

और देखिये। महाभारत में लिखा है कि इस कथा को लिखने के लिए व्यास जी ने पहले ब्रह्माजी का और फिर गणेश जी का आह्वान किया। व्यास जी इस कथा को लिखवाते गये और गणेशजी इसे लिखते गये। देखिये इस कथा में गणेशजी भी किसी— न— किसी तरह शामिल हो ही गये, किसी भी तो देवी— देवता कहलाने वाले का नाम नह° छूटा? गणेशजी का आह्वान करने का मतलब तो यह है कि वह व्यक्त अथवा स्थूल आकार में न थे। परन्तु कमाल देखिये कि व्यास जी के बुलाने पर गणेश जी अव्यक्त से व्यक्त हो गये और उनके मुंशी बन गये और इतना समय तक वह स्टेनो ;जमदवद्ध का काम करते रहे? क्या यह सभी बातें विश्वसनीय हो? यदि यह संदिग्ध है तो इन्ह° पर आधारित यह मन्तव्य कि गीता— ज्ञान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को युद्ध के मैदान में दिया था, इस पर भी किंचित विचार करने की आवश्यकता है — ऐसा मानना चाहिए।

क्या महाभारत में वख्णत अòों— शòों, कवच आदि का वर्णन सत्य है?

महाभारत में जिस युद्ध का वर्णन है, उसके कुछेक योद्धाओं की जन्म— कहानी पर तो हम पहले विचार कर आये हो। अब आप थोड़ा उनके अòों— शòों पर भी विचार कीजिये। महाभारत में लिखा है कि अर्जुन को गाण्डीव धनुष अग्नि से मिला और पाशुपत— अò शिव से मिला। कर्ण को तो कवच जन्म से ही मिला हुआ था। इसी प्रकार, अन्य अनेकानेक व्यक्तियों के शòों के बारे में भी ऐसा ही वर्णन है कि उन्हें अमुक शò अमुक 'देवता' से मिला। श्रीकृष्ण के स्वदर्शन चक्र तथा अनेक योद्धाओं के शंखों का भी अजीब ही उल्लेख है। आप कुछ विवेक प्रयोग कीजिये कि क्या शिव कैलाश पर्वत अथवा हिमालय पर बैठे रहते हो कि अर्जुन ने वहाँ जाकर शिव

से युद्ध किया और उनसे पाशुपत— अò प्राप्त किया? इसी प्रकार, क्या अग्नि इत्यादि के पास कोई शò या धनुष रखे हो कि अर्जुन ने अग्नि से गाण्डीव धनुष प्राप्त किया? स्पष्ट है कि यह कोई ऐतिहासिक घटना है परन्तु उसने उसके आसपास अनेक कहानियाँ गढ़कर उसे एक बड़ी कथा का रूप दिया है और इसमें सभी विषयों पर अपनी कला व्यक्त करने का प्रयास किया है। उसने स्थान—स्थान पर कौतूहल बनाये रखने के लिए कुछ— न— कुछ सामग्री जुटाई है और उसके लिए कल्पना का खूब प्रयोग किया है। परिणाम यह हुआ है कि युद्ध का रूप, युद्ध में भाग लेने वाले योद्धा, उनके अò— शò आदि सभी का रूप और वर्णन बदल गया है और सारा ग्रन्थ संदिग्ध तथा प्रक्षिप्त हो गया है और विवेक द्वारा निर्णय किये बिना, उस लिखित सामग्री के आधार पर यह मानना कि गीता— ज्ञान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को युद्ध के मैदान में दिया था, भी अंधश्रद्धा मात्र होगा।

युद्ध का तो सारा वर्णन ही बड़ा अजीब है। महाभारत में लिखा है कि युद्ध शुरु होने से पहले युधिष्ठिर ने हरेक कौरव— सेनापति के पास जाकर पूछा कि उस— उस योद्धा को कैसे मारा जाये। ध्यान दीजिए कि एक ओर तो कौरवों को धर्म— विमुख और ईश्वर— विमुख माना गया है, तभी तो उनके विनाश की युक्ति रची जा रही है और दूसरी ओर सभी कौरव महारथी यह बात बताने में भी समर्थ हो कि उनकी मृत्यु कैसे होगी। भला यह शक्ति उनमें कैसी आ गई? युधिष्ठिर धर्म— सम्पन्न होते हुए और धर्मराज का पुत्र होते हुए भी कौरव— पक्ष के महारथियों की मृत्यु को नह° जान सका और कौरव स्वयं जान सके, यह कैसी विडम्बना है! पुनश्च, यदि कौरव सेनापतियों ने पहले ही से ये रहस्य बता दिये कि उनकी मृत्यु कैसी होगी तो क्या वे द्रोही और विश्वासघाती न ठहरे? इसी प्रकार, जबकि युद्ध शुरु ही नह° हुआ था, कर्ण ने युद्ध में लड़ना स्वीकार ही नह° किया था और उसने शल्य को अपना रथवान बनाने का विचार ही नह° किया था और यह पता ही नह° था कि कर्ण का रथ युद्ध क्षेत्र में धँस जायेगा तब महाभारत में लिखा है कि युधिष्ठिर अपने मामे शल्य को कहा कि तुम युद्ध में कर्ण को निरुत्साह करना। इस प्रकार सभी को पूर्वदर्शी अथवा भविष्य द्रष्टा बना दिया गया है और कहानी को आगे बढ़ाया गया है। एक ओर हिंसा की प्रवृत्ति, रक्त—पात की तैयारी और दूसरी ओर योद्धाओं का भविष्य— दर्शन, यह दोनों बातें भला कैसे चल सकती हो? पुनश्च, भगवान को पहचानने पर भी क्या अर्जुन श्रीकृष्ण को अपने रथ का रथवान बनाने का साहस कर सकता था? और जब कि श्रीकृष्ण ने किसी शò

का प्रयोग ही नह° किया और चारों ओर से तीरों की वर्षा हो रही थी तो क्या रथ के आगे के भाग में बैठे हुए रथवान को किसी बाण ने छुआ तक भी नह°? ये सारी बातें कितनी अजीब हो!

नारद, शाप, वरदान आदि की भरमार

ध्यान से पढ़ने पर आप इसी निर्णय पर पहुँचेंगे कि महाभारत में न केवल भविष्य— दर्शन की बहुलता मालूम होती है बल्कि शाप और वरदानों के उल्लेख से तो सारा महाभारत भरा पड़ा है। महाभारत का हरेक प्रसंग इसी प्रकार के ही किसी तत्व से ही आगे बढ़ता है। यदि आप महाभारत में ही वरदान और शाप तथा नारद के आने— जाने की बातों को निकाल दें तो महाभारत का सौवाँ हिस्सा भी नह° रहेगा और सभी मुख्य प्रसंग तो उसमें से निकल ही जायेंगे।

उदाहरण के तौर पर महाभारत में लिखा है कि (१) कर्ण को परशुराम ने शाप दिया था कि तुम्हें यह धनुख्रवद्या समय पर काम न आयेगी। कर्ण को एक ब्राह्मण ने भी शाप दिया था कि कठिनाई के समय तुम्हारे रथ का पहिया ज़मीन में धँस और फँस जायेगा। इन्ह° शापों के कारण कर्ण की मृत्यु हुई। इसी प्रकार, पाण्डु को आस्तिक ऋषि ने शाप दिया था कि तुम Óी— भोग करते समय मरोगे। प्रसंग— प्रसंग में शाप की बात है, यहाँ तक कि लिखा है कि कुत्ते ने भी राजा जनमेजय को शाप दिया था। (२) इसी प्रकार, वरदानों का वर्णन है। लिखा है कि हनुमान ने भीमसेन को वरदान दिया कि मो अर्जुन के रथ पर लगे झण्डे पर आकर दिव्य रूप में विराजमान होऊंगा। दुर्वासा ने कुन्ती को वर दिया कि मन्त्र के प्रयोग से देवता प्रगट होकर पुत्र देंगे। हरेक को कोई शाप या कोई वरदान तो मिला ही हुआ था। जब कोई प्रसंग आगे नह° बढ़ता तो नारदजी आ पहुँचते है और कोई ऐसी बात बता देते हो जिसे कि कथा का कलेवर बढ़ाने में सुविधा होती है और किसी घटना की यथाख्रथकता सिद्ध करने में भी सुगमता होती है। (३) इनके अतिरिक्त पूर्वजन्मों की बातों को भी महाभारत में बहुत आधार बनाया गया है। उदाहरण के तौर पर उसमें लिखा है कि शिखण्डी को यह बात मालूम थी कि वह पूर्व जन्म में अम्बिका नाम की नारी था और भीष्म को भी यह मालूम था कि शिखण्डी द्वारा उसकी मृत्यु होनी है। इस मन— गढ़न्त बात को कहकर लेखक ने युद्ध के दिन शिखण्डी को अर्जुन के साथी के रूप में ला खड़ा किया है। न जाने महाभारत में पूर्व जन्मों की बातों का कितनी स्थलों पर प्रयोग किया गया है। (४) इतना ही नह°, इस जन्म में भी अपनी इच्छा के अनुसार पशुओं, जड़ पदार्थों अत्यादि के रूप

धारण किये जाने का उल्लेख भी इतना अधिक है कि जिसकी गिनती करना कठिन है। लिखा है कि पृथ्वी गौ का रूप धारण करके देवताओं के पास गई, तक्षक ने राजा परीक्षित का वध करने के लिए फल में एक छोटे कीड़े का रूप धारण किया, उस कीड़े को परीक्षित ने कहा कि तुम मुझे डस कर मार डालो। इन्द्र ने सर्प का रूप धारण करके कर्ण को डसा, इन्द्र ने ब्राह्मण का रूप धारण करके कर्ण का कवच भी उससे दान में ले लिया ताकि कर्ण अर्जुन से हार जाये, हनुमान ने अपने वारन— शरीर को पहाड़ से भी बड़ा कर लिया और फिर छोटा कर दिया। देखिये तो कैसी— कैसी बातें लिखी है!! क्या यह कल्पना— लोक की बातें हो या इस कर्मक्षेत्र की? इस प्रकार की बहुत बातें महाभारत में और भी लिखी हुई हो जैसे कि पशुओं का बोलना, आकाशवाणी का होना, कसम अथवा शपथ लेना या वचन करना, इत्यादि— इत्यादि। उदाहरण के तौर पर लिखा है दुर्योधन के मरते समय देवताओं ने आकाश से पुष्प वर्षा की, अर्जुन जयद्रथ को मारने की शपथ ली, शल्य ने दुर्योधन का पक्ष लेने का वचन दिया आदि— आदि। अवतारों का वर्णन तो स्थान—स्थान पर है ही, जैसे कि कर्ण को सूर्य का अवतार, भीम वायु का अवतार, युधिष्ठिर को धर्मराज का अवतार बतलाया गया है। इन सभी को उचित बताने के लिए लेखक कहता है कि ये सभी इन्द्र के अवतार थे। आप स्वयं सोचिये कि यह सारी कथा ऐतिहासिक हो सकती है क्या? क्या इसमें क्षेपक (मिलावट) नह° है? ऊपर शाप, वरदान, पूर्व जन्मों की बातें, आकाशवाणी, अवतार, अनेक रूप धारण करना, पशुओं का बोलना आदि— आदि क्या ये इतिहास की कोटि के बातें हो सकती हो यह लेखक के अपने ही मन की उधेड़— बुन है? यदि उस समय आकाश से पुष्प वर्षा होती थी तो आज कभी भी क्यों नह° होती? आज इन्द्र, वायु आदि अवतार क्यों नह° लेते?

अत: विवेक द्वारा स्पष्ट है कि महाभारत में युद्ध, युद्ध में भाग लेने वाले पाण्डवों और कौरवों के जन्म, युद्ध में प्रयोग होने वाले अÖों— शÖों का जैसा अविश्वसनीय वर्णन है और इसमें शाप, वरदान, अवतारवाद, भविष्य— दर्शन, आकाशवाणी, नारद आगमन, आदि— आदि के जिस तरह के प्रयोग से जो अमान्य वृत्तान्त लिखे हो, उनके आधार पर यह कहना गलत है कि श्रीकृष्ण ने युद्ध के मैदान में अर्जुन को गीता— ज्ञान दिया था। वास्तव में श्रीकृष्ण और उनके समय के लोग तो इतने अहिंसक थे कि उनके ज़माने में लोगों को युद्ध का परिचय ही न था, उनके मन में क्रोध लेशमात्र भी न था बल्कि वे वैष्णव थे, दैवी स्वभाव वाले थे और परस्पर प्रेम— भाव वाले थे। गीता— ज्ञान श्रीकृष्ण का उत्तम दैवी स्वराज्य स्थापन करने के लिए वास्तव में परमपिता

परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा के द्वारा कलियुग के अन्त और सतयुग के आरम्भ के संधिकाल में दिया था और उसके बाद एक महाभारी विý युद्ध हुआ अवश्य था परन्तु गीता— ज्ञान लेने देने वालों ने उसमें कोई भी सशò भाग नह° लिया था। उस महाभारी महाभारत युद्ध द्वारा महाभारी विनाश हुआ था और उसके बाद ही श्रीकृष्ण का निष्कण्टक स्वराज्य स्थापन हुआ था जिसमें लड़ाई— झगड़ा कभी नाम मात्र भी न होता था। श्रीकृष्ण का वह दिव्य स्वराज्य सतयुग के प्रारम्भिक काल में हुआ और बाद में द्वापर युग के विस्मृति— काल में पौराणिकों ने उनके नाम के साथ गलत ढंग से महाभारत युद्ध का सम्बन्ध जोड़ दिया और महाभारत का जो वर्णन किया वह भी बिल्कुल गलत, अविश्वसनीय, अमान्य तथा असत्य है, जैसे कि कुछ उदाहरणों से इस लेख में स्पष्ठ किया गया है।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com